Year-8; Sept. 2017
ISSN–2231-1130
UGC Sr. No. – 48398
VEETHIKA

उपमा सम्राट के रुप में महाकवि कालिदास

डॉ० रेखा वर्मा*

संस्कृत साहित्य में कालिदास का स्थान सर्वोत्कृष्ट है जिस प्रकार अंग्रेजी साहित्य में शेक्सपियर को, बंग्ला साहित्य में रवीन्द्रनाथ टैगोर को लोग शीर्ष पर रखते हैं उसी प्रकार संस्कृत साहित्य में महाकवि कालिदास को लोग शिखर पर रखते हैं। महाकवि कालिदास ने सात रचनाएं की है जिसमें दो महाकाव्य–रघुवंशम् और कुमारसम्भवम्, एक खण्ड काव्य–मेघदूतम्, एक गीतिकाव्य–ऋतुसंहारम् तथा तीन नाटक– अभिज्ञानशाकुन्तलम् मालविकाग्निमित्रम्, विक्रमोर्वशीयम्। इन काव्यों में कालिदास ने अनेक अलंकारो का प्रयोग किया है किन्तु सर्वाधिक उन्होंने उपमालंकार को अपनाया है उनकी उपमाएं लोगों को इतने प्रिय लगे कि कालिदास को उपमा सम्राट कहा जाने लगा। इनके विषय में यह उक्ति प्रसिद्ध है–

उपमा कालिदासस्य भारवेरर्थगौरवम्।
दण्डिनः पदलालित्यं माघे सन्ति त्रयो गुणाः।।

कालिदास उपमा के लिए, भारवि अपने अर्थगौरव के लिए, दण्डी अपने पदलालिव्य के लिए बहुत अधिक प्रसिद्ध है किन्तु ये तीनों गुण एक साथ महाकवि माघ में विराजमान हैं।

उपमा कालिदास का अत्यन्त प्रिय अलंकार है। यह कहना असंगत न होगा कि कालिदास उपमा से अलंकृत है। उनकी उपमाएं असाधारण और मनोहरम होती हैं। उनकी विशेषता यह है कि उनमें लिंग साम्य, भाव–साम्य और रमणीयता का अनुपम समन्वय है। उनकी उपमाएं एकांगी न होकर सर्वांगीण और व्यापक हैं कहीं काव्यशास्त्रीय, दार्शनिक, व्याकरण से संबद्ध और वेद–विषयक हैं, तो कहीं प्रकृति के विभिन्न रुपों से संबद्ध हैं। कहीं मूर्त की मूर्त से तुलना है तो कहीं मूर्त की अमूर्त से तुलना की है।

कालिदास केवल एक सुन्दर दीपशिखा की उपमा से 'दीपशिखा कालिदास' के रुप में प्रसिद्ध हो गये। इन्दुमती स्वयंवर वर्णन में इन्दुमती की उपमा संचारिणी दीपशिखा से की गई है। वह जिस–जिस राजा को छोड़कर आगे निकल जाती थी, वह उसी प्रकार विवर्ण एवं विषादाकुल हो जाता था, जैसे संचारिणी दीपशिखा के आगे निकल जाने पर पूर्व स्थित राज–प्रसाद अन्धकार युक्त हो जाता है कितनी सुन्दर उपमा है–

संचारिणी दीपशिखेव रात्रौ
यं यं व्यतीयाय पतिंवरा सा।
नरेन्द्रमार्गादृ इव प्रपेदे
विवर्णभावं स स भूमिपालः। ।।

(रघु० 6–67)

रघुवंश महाकाव्य में उपमालंकार का एक सुन्दर दृष्टान्त देखने को मिलता है जहाँ राजा दिलीप नन्दिनी गाय की सेवा में लगे है राजा गाय को चराकर शाम के समय घर लौटे हैं उस समय राजा गाय को आगे किए हुए थे और रानी सुदक्षिणा उसकी सेवा में आगे बढ़कर गाय की अगुवानी की, इस समय वह नन्दिनी गाय राजा और रानी सुदक्षिणा के बीच में ऐसी शोभा दे रही थी जैसे रात और दिन के बीच में सन्ध्या सुशोभित होती है–

पुरस्कृता वर्त्मनि पार्थिवेन
प्रत्युद्गता पार्थिव धर्मपत्न्या।
तदन्तरे सा विरराज धेनु–
र्दिनक्षपामध्यगतेव सन्ध्या।।

(रघु० 2–20)

रघुवंश महाकाव्य के द्वितीय सर्ग के दूसरे श्लोक में भी एक सुन्दर उपमा का दृष्य देखने को मिलता है राजा दिलीप की धर्मपत्नी रानी सुदक्षिणा नन्दिनी गाय की सेवा करते हुए उसके मार्ग का अनुसरण वैसे ही किया जैसे श्रुति के अर्थ के अनुसार स्मृति चलती है–

तस्याः खुरन्यासपवित्रपांसु–
मपांसुलानां धुरि कीर्तनीया।

* स०अ०, एम०पी०एल०एल० आदर्श इण्टर कॉलेज, फैजाबाद।

मार्गं मनुष्येश्वर धर्मपत्नी
श्रुतेरिवार्थं स्मृतिरन्वगच्छत्।।

(रघु० 2–2)

अभिज्ञानशाकुन्तल में तो कालिदास ने उपमालंकार का पहाड़ ही खड़ा कर दिया है शाकुन्तल के चौथे अंक के चौथे श्लोक में शकुन्तला की उपमा शमीवृक्ष से दी है–

इस श्लोक में कण्व ऋषि को संबोधित करते हुए कहा गया है– हे ब्रह्मन्, दुष्यन्त के द्वारा स्थापित तेज (वीर्य) को पृथ्वी के कल्याण के लिए धारण करने वाली अपनी पुत्री को छिपी हुई अग्नि से युक्त शमीवृक्ष के तुल्य समझो :–

दुष्यन्तेनाहितं तेजो दधानां भूतये भुवः।
अवेहि तनयां ब्रह्मन्नग्निगर्भां शमीमिव।

(शाकुन्तल 4–4)

इसी प्रकार शाकुन्तल के चौथे अंक के सातवे श्लोक में उपमा का एक सुन्दर उदाहरण देखने को मिलता हैं जिसमें कण्ठ ऋषि अपनी पुत्री शकुन्तला से कहते हैं–

शर्मिष्ठा जिस प्रकार ययाति की अतिप्रिय रानी थी, उसी प्रकार तू पति की अतिप्रिय रानी हो, उस शर्मिष्ठा ने जिस प्रकार सम्राट पुत्र पुरु को प्राप्त किया, उसी प्रकार तू भी सम्राट पुत्र को प्राप्त कर–

ययातेरिव शर्मिष्ठा भर्तुर्बहुमता भव।
सुतं त्वमपि सम्राजं सेव पूरुमवाप्नुहि।।

(शाकुन्तल 4–7)

शाकुन्तल के चौथे अंक के उन्नीसवे श्लोक में शकुन्तला के विदाई के समय उसे कण्ठ ऋषि एक उपमा द्वारा समझाते हए कहते हैं–

पुत्री, तुम महाकुलीन पति के प्रशंसनीय गृहस्वामिनी अर्थात महारानी के पद पर अधिष्ठित होकर ऐश्वर्य के कारण महत्वपूर्ण कार्यों में प्रतिक्षण व्यस्त होकर और शीघ्र ही पूर्व दिशा जिस प्रकार पवित्र सूर्य को जन्म देती है उसी प्रकार पवित्र चक्रवर्ती पुत्र को जन्म देकर, मेरे वियोग के दुःख को भूल जाओगी।

अभिजनवतो भर्तुः श्लाघ्ये स्थिता गृहिणीपदे
विभवगुरुभिः कृत्यैस्तस्य प्रतिक्षणमाकुला।
तनयमचिरात् प्राचीवार्कं प्रसूय च पावनं
मम विरहजां न त्वं वत्से शुचं गणयिष्यसि।।

(शाकुन्तल 4–19)

इसी प्रकार शाकुन्तल के प्रथम अंक के दसवें श्लोक में उपमा का दृष्टान्त मिलता है राजा दिलीप कण्ठ ऋषि के आश्रम के पास शिकार खेलते–खेलते पहुंचते है और एक मृग पर बाण छोड़ने जा रहे हैं तभी दो तपस्वी हाथ उठाकर राजा दुष्यन्त से कहते हैं कि यह आश्रम का मृग है इसे न मारिए। इस सुकुमार मृग के शरीर रुपी पुष्पराशि पर अग्नि के तुल्य यह बाण न चलाइए। दुःख की बात है कि कहां तो तुच्छ हिरणों का अतिचंचल जीवन और कहा तीक्ष्ण प्रहार करने वाले बज्र के तुल्य कठोर आपके बाण ?

न खलु न खलु बाणः सन्निपात्योऽयमस्मिन्
मृदुनि मृगशरीरे पुष्पराशाविवाग्निः
क्व बत हरिणकानां जीवितं चातिलोलं
क्व च निशितनिपाता बज्रसाराः शरास्ते।।

(शाकुन्तल 1–10)

मेघदूत खण्ड काव्य के उत्तर मेघ में तो एक ऐसा श्लोक आया है जहां पर पूर्णोपमा अलंकार की छटा दिखाई पड़ती है–

विद्युत्वन्तं ललितवनिताः सेन्द्रचापं सचित्राः
सङ्गीताय प्रहतमुरजाः स्निग्धगम्भीरघोषम्।
अन्तस्तोयं मणिमयभुवस्तुङ्गमभ्रंलिहाग्राः
प्रासादास्त्वां तुलयितुमलं यत्र तैस्तैर्विशेषैः।।

इसमें मेघ के अन्दर स्थित गुणों से अलकापुरी के भवनों में स्थित वस्तुओं से तुलना दिखाया गया है– हे मेघ यदि तुम्हारे अन्दर बिजली है तो वहां के भवनों में सुन्दरी वनिताएं है, यदि तुम्हारे अन्दर इन्द्रधनुष है तो वहां के भवन चित्रों से सुसज्जित हैं, यदि तुम मधुर और गम्भीर गर्जना करने वाले हो तो वहां भी संगीत के लिए मृदंग आदि वाद्ययन्त्र बजाये जाते हैं यदि तुम ऊंचे हो तो अलका में भी ऊँची–ऊँची गगनचुम्बी शिखर वाले

भवन हैं इसलिए ये सब तुमसे तुलना करने में समर्थ हैं।

उपर्युक्त श्लोकों का अध्ययन करने के उपरान्त हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि कालिदास को जो उपमा सम्राट की पदवी दी गई है वह न्यायोचित है।

सन्दर्भ :

1. अभिज्ञान शाकुन्तलम् : डॉ० कपिलदेव द्विवेदी
2. संस्कृत साहित्य का इतिहास : डॉ० कपिलदेव द्विवेदी
3. मेघदूतम (उत्तरमेघ) : श्री तारिणीश झा
4. रघुवंशम् : पं० रामचन्द्र शुक्ल